9

लिपि एवं देवनागरी-लिपि (Script and Devnagari-Script)

मुख्य बिन्दु

- लिपि और लिपि का विकास
- संसार की प्रमुख लिपियाँ
- भारतीय लिपियाँ-सैंधव लिपि, ब्राह्मी लिपि एवं खरोष्ठी लिपि
- देवनागरी लिपि की विशेषताएँ
- देवनागरी लिपि के दोष
- देवनागरी लिपि में सुधार हेतु प्रयत्न
- देवनागरी लिपि का मानकीकरण

1. लिपि और लिपि का विकास

लिपि—लिपि को अंग्रेजी में 'स्क्रिप्ट' (Script) कहते हैं, जिसका शाब्दिक अर्थ वर्ण या अक्षर के अंकित चिह्न, लिखावट, लिखे हुए अक्षर, लिखने की विविध पद्धतियाँ इत्यादि है। डॉ. शिवचंद्र ने 'ब्लॉक एवं ट्रेगर' द्वारा दी गई 'भाषा' की परिभाषा के आधार पर 'लिपि' की परिभाषा देते हुए कहा है कि—"लिपि दृश्य यादृच्छिक प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके माध्यम से एक समुदाय परस्पर लिखित विचार-विनिमय करते हैं। ....भाषा श्रव्य होती है और इसे दृष्टिगोचर बनाने के लिए जिन ध्वनि-प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें लिपि या लिपि-चिह्न कहते हैं।" वस्तुतः, भाषा-ध्वनि को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त प्रतीक-चिह्न लिपि है। यदि भाषा भाव-प्रकाशन का मौखिक साधन है तो लिपि अभिव्यक्ति के कोश को अक्षुण्ण रखने का लिखित माध्यम है।

भाषा-लिपि में संबंध—भाषा एवं लिपि में कई अंतर हैं। अंतर देखें—1. भाषा

Scanned by TapScanner

द्रव्य है जबकि लिपि दृश्य एवं पाठ्य है। 2. भाषा सूक्ष्म है जबकि लिपि स्थूल है। 3. भाषा ध्वनि-संकेतों का प्रतीक है जबकि लिपि उन ध्वनि-प्रतीकों का प्रतीक है। 4. भाषा मूलतः स्थानिक एवं तात्कालिक माध्यम है, लिपि उसे सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक रूप प्रदान करती है। 5. भाषा उच्चरित होकर लुप्त हो जाती है जबकि लिपि चिरकाल तक संचित एवं ग्राह्य रहती है। दूसरे शब्दों में, इनमें अस्थायित्व एवं स्थायीत्व संबंधी अंतर है। 6. भाषा में सुर, तान इत्यादि के द्वारा अनेक मनोभाव प्रकट किये जा सकते हैं जबकि लिपि में नहीं। 7. भाषा अपने मूल रूप में ध्वनियों पर आधारित है, लिपि में उन ध्वनियों को रेखाओं द्वारा व्यक्त करते हैं। दोनों में माध्यम का अंतर है।[2] 8. भाषा का संबंध जीवन से है जबकि लिपि का संबंध सभ्यता के विकास से है।[3]

कई दृष्टियों से भाषा एवं लिपि में समानता है। देखें—1. भाषा एवं लिपि दोनों मानव के विचारों एवं भावाभिव्यक्ति के प्रमुख माध्यम हैं। 2. भाषा की ध्वनि-व्यवस्था की तरह लिपिगत वर्ण (Alphabet) भी रूढ़ एवं परम्परागत होते हैं। 3. भाषा-लिपि दोनों में ध्वनि और अर्थ का संबंध नित्य न होकर यादृच्छिक और प्रतीकात्मक होता है। 4. मानव-हृदय में उठने वाले सम्पूर्ण भावों या विचारों की पूर्ण अभिव्यक्ति प्रकट करने में भाषा एवं लिपि दोनों असमर्थ हैं। 5. दोनों देशकालादि से भिन्न और मानव की सांस्कृतिक उन्नति के प्रतीक हैं। 6. दोनों का ज्ञान शिक्षण और अभ्यास से प्राप्त होते हैं।

लिपि का उद्भव और विकास—भाषा की उत्पत्ति के समान लिपि की उत्पत्ति का प्रश्न भी विवादग्रस्त एवं मात्र अनुमान पर आधारित है। लिपि की उत्पत्ति कब और कैसे हुई ? इस संबंध में मत वैभिन्य हैं। यह भारतीयों की देन है अथवा विदेशी अनुकृति है ? लेखन के आरंभिक साधन क्या थे ? लिपि का विकास किससे हुआ? इत्यादि अनेक प्रश्न ऐसे हैं, जिनके विषय में निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता है। ये प्रश्न आज भी एक समस्या अथवा पहेली के रूप में हमारे समक्ष विद्यमान हैं। इस संबंध में एक प्रमुख भारतीय मत 'दिव्योत्पत्ति का सिद्धांत' है, जिसके अनुसार लिपि के आदि आविष्कर्त्ता ब्रह्मा हैं। इसके पीछे यह तर्क दिया जाता है कि लिपि ब्रह्मा जी ने बनाई है, इसलिए इसका नाम 'ब्राह्मी' है। लिपि की उत्पत्ति के संबंध में दूसरा मत पाश्चात्य विद्वानों का है। लिपि के संबंध में पाश्चात्य मान्यता यह है कि भारत में लिपि की उत्पत्ति अधिक प्राचीन नहीं है। भारत की प्राचीन लिपियाँ (ब्राह्मी और खरोष्ठी) का समय ई. पूर्व तीसरी सदी है, जिसका उल्लेख अशोक के शिलालेखों में प्राप्त होता है। ये दोनों विदेशी लिपियों की अनुकृति हैं और ये सेमेटिक लिपियों की वंशज हैं। वस्तुतः, इन विभिन्न मत-मतांतरों में कौन मत प्रामाणिक है, इस संबंध में निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता है।

Scanned by TapScanner

अधिकांशतः, विद्वानों की यह मान्यता है कि भाषा की भाँति लिपि भी मानव-बुद्धिमत्ता की अर्जित सम्पत्ति है। मनुष्य की आवश्यकतानुसार मनुष्य द्वारा ही लिपि का जन्म हुआ। अब तक की उपलब्ध सामग्री के आधार पर प्राचीनतम लिपि-चिह्न 6 हजार वर्ष पूर्व तक के मिलते हैं।

लिपि के विकास-क्रम के संदर्भ में 6 प्रकार की लिपियाँ प्राप्त होती हैं—1. चित्रलिपि 2. सूत्रलिपि 3. प्रतीकात्मक लिपि 4. भाव लिपि 5. भाव ध्वनिमूलक लिपि और 6. ध्वनि लिपि। इनमें चित्रलिपि, भावलिपि एवं ध्वनिलिपि ही मुख्य लिपियाँ हैं, शेष गौण लिपियाँ हैं। इनका विवेचन इस प्रकार द्रष्टव्य है—

1. चित्रलिपि (Pictography)

चित्रलिपि लिपि का वह प्राचीनतम व प्रारंभिक रूप था, जिसमें वस्तुओं को चित्र के द्वारा अंकित किया जाता था। इस लिपि में पहाड़, मनुष्य, वृक्ष, पशु-पक्षियों इत्यादि की आकृति अंकित कर दी जाती थी। चित्रलिपि पत्थर, हड्डी, हाथी-दाँत, सींग, छाल, मिट्टी के पात्रों पर अंकित किये जाते थे। यह लेखन-इतिहास की पहली सीढ़ी थी। चित्रलिपि के नमूने फ्रांस, स्पेन, यूनान, इटली, मिश्र, ग्रेट-ब्रिटेन, कैलीफोर्निया, ब्राजील इत्यादि देशों में मिले हैं।

गुण-दोष

गुण—1. सर्वबोध्यता, सार्वदेशिकता एवं सार्वकालिकता चित्र-लिपि का प्रधान गुण था। 2. इससे वस्तु का शीघ्र बोध हो जाता था। 3. शिक्षण की अनावश्यकता इसके अन्य गुण थे। चित्रलिपि में गुणों की बजाय दोष ज्यादा थे। मसलन-समय और श्रम साध्यता, अमूर्त्त भावों एवं विचारों का प्रकाशन नहीं चित्रलिपि के प्रमुख दोष थे। इसके अन्य दोषों में व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के बोध में असमर्थता, अनंत वस्तु के लिए अनंत चित्रों की अनंतता, स्थान, समय इत्यादि का बोध चित्र-लिपि द्वारा नहीं होना इत्यादि थे। इनके अतिरिक्त, यह लिपि ज्यादा स्थान घेरती थी तथा इसमें मंद गति से चित्रांकन होता था।

2. भावलिपि (Ideography)

भावलिपि लिपि—विकास की द्वितीय मुख्य सीढ़ी भावलिपि थी। चित्रलिपि की श्रमसाध्यता के फलस्वरूप भावलिपि का उदय हुआ। भावलिपि वह लिपि थी, जो ध्वनियों को व्यक्त न करके भावों, विचारों और वस्तुओं आदि को प्रकट करती थी। यह वस्तुतः चित्र लिपि का ही विकसित रूप था, जिसमें चित्रों के सरलीकरण एवं सम्बद्ध अर्थ पर विशेष जोर दिया जाता था। जैसे—सूर्य के लिए गोलों का निर्माण, रुदन के लिए आँख का चित्र बनाकर उससे आँसू टपकती बूँदों का प्रदर्शन, आदमी के लिए दो पैर के रूप में दो रेखाओं का निर्माण, अस्पताल के लिए + चिह्न, खतरा के लिए गुणा चिह्न के ऊपर खोपड़ी बनाना इत्यादि।

Scanned by TapScanner

में इसका उल्लेख मिलता है। जैसे—लाल रंग युद्ध का प्रतीक था तो सफेद रंग युद्ध-विराम का।

3. **'भाव ध्वनिमूलक लिपि'**—कुछ अंशों में यह लिपि भावमूलक थी तो कुछ अंशों में ध्वनिमूलक। भोलानाथ तिवारी ने भी लिखा है कि—"इस लिपि के कुछ चिह्न चित्रात्मक तथा भावमूलक होते थे तो कुछ ध्वनिमूलक। दोनों का ही इसमें यथासमय प्रयोग होता था। कुछ विद्वानों के अनुसार सिंधु-घाटी की लिपि भी इसी श्रेणी की है।[6] भाव ध्वनिमूलक लिपि के अंतर्गत मेसोपोटामियन, मिस्री, हिंदी एवं आधुनिक चीनी लिपि इत्यादि आती हैं।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि लिपि के विकास में सूत्रलिपि एवं प्रतीकात्मक लिपि का कोई महत्त्वपूर्ण स्थान नहीं था। इनका पूर्ववर्ती चित्रलिपि अथवा परवर्ती भावमूलक या ध्वनिमूलक लिपि से भी कोई सरोकार नहीं था। लिपि के विकास का प्रथम चरण चित्रलिपि है, जिसके विकास का अगला चरण भावमूलक लिपि है। कालांतर में भावमूलक लिपि विकसित होकर भाव ध्वनिमूलक लिपि और फिर यह ध्वनिमूलक लिपि में विकसित हुई। ध्वनिमूलक लिपि में भी आक्षरिक ध्वनिमूलक लिपि का स्थान पहले आता है, फिर वर्णिक ध्वनिमूलक लिपि आती है। वस्तुतः, 'चित्रलिपि' विकास-क्रम की प्रथम सीढ़ी है तो 'वर्णिक ध्वनि मूलक लिपि' विकास-क्रम का अंतिम सोपान है।

Scanned by TapScanner